CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 07 (2020-21)

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

i. इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं – खंड – अ और खंड – ब। खंड-अ में वस्तुपरक तथा खंड-ब में वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।

ii. खंड-अ में कुल 6 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

iii. खंड-ब में कुल 8 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड-अ वस्तुपरक प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**

जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है, क्योंकि उद्योग - धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी - कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो, तो इसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो । इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना और व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान या महत्व नहीं रहता । 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित' कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है। क्योंकि यह मनुष्य

की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबा कर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

01. जाति व्यवस्था में मनुष्य किन परिस्थितियों में अपना पेशा बदल सकता है ?

(क) भूखों मरने की स्थिति में

(ख) प्रतिकूल परिस्थितियों में

(ग) कभी भी नहीं

(घ) आवश्यकता पड़ने पर

02. जाति प्रथा के अंतर्गत बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण कौन सा है ?

(क) पेशा परिवर्तन की अनुमति का नहीं होना

(ख) पेशा परिवर्तन की मंजूरी

(ग) पैतृक पेशा को नहीं अपनाना

(घ) श्रम विभजन

03. श्रम विभाजन किस पर निर्भर होना चाहिए ?

(क) जाति के अनुसार

(ख) समाज के अनुसार

(ग) माता-पिता की इच्छा पर

(घ) व्यक्ति की स्वेच्छा पर

04. आर्थिक दृष्टिकोण से जाति प्रथा कैसी है ?

(क) लाभदायक

(ख) हानिकारक

(ग) नितांत आवश्यक

(घ) बहुत अच्छी

05. आज के उद्योगों में सबसे बड़ी समस्या क्या है ?

(क) गरीबी

(ख) अरुचिकर कार्य

(ग) आर्थिक स्थिति

(घ) श्रमिकों की कमी

06. गद्यांश के अनुसार भूखों मरने की नौबत कब आती है ?

(क) उपयुक्त पेशा नहीं होने के कारण

(ख) प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण

(ग) अनुकूल परिस्थितियों के कारण

(घ) श्रम विभाजन के कारण

07. जाति प्रथा से मनुष्य के पेशे पर क्या असर पड़ता है ?

(क) आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है

(ख) श्रम विभाजन अच्छे से होता है

(ग) वह अपनी मर्जी से पेशा बदल सकता है

(घ) वह एक ही पेशे में बँधा रहता है

08. कैसी स्थिति मनुष्य को टालू काम करने के लिए प्रेरित करती है ?

(क) अपनी मर्जी की नौकरी नहीं होने की स्थिति में

(ख) बेरोजगारी की स्थिति में

(ग) रोजगार होने की स्थिति में

(घ) अपने अनुसार नौकरी करने में

09. मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता कब पड़ सकती है ?

(क) जाति प्रथा होने के कारण

(ख) तकनीक में बदलाव आने के कारण

(ग) मर्जी की नौकरी के कारण

(घ) बेरोजगारी के कारण

10. मनुष्य की व्यक्तिगत भावना का किस में कोई महत्व नहीं है ?

(क) आदर्श समाज की स्थापना में

(ख) जाति-प्रथा में

(ग) श्रम विभाजन में

(घ) नौकरी नहीं करने में

OR

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

रात्रि अपनी भीषणताओं के साथ चलती रहती और उसकी सारी भीषणता को, ताल ठोककर, ललकारती रहती थी... सिर्फ पहलवान की ढोलक! संध्या से प्रात:काल तक एक ही गति से बजती रहती — चट् धा... गिर धा... चट् धा... गिर धा... !' यानी 'आ जा, भिड़ जा, आ जा, भिड़ जा !'... बीच बीच में — 'चटाक् चट् धा, चटाक चट् धा !' यानी उठाकर पटक दे ! उठाकर पटक दे।' यही आवाज़ मृत गांव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी।

लुट्टन सिंह पहलवान !

यों तो वह कहा करता था — 'लुट्टन सिंह पहलवान को होल इण्डिया के लोग जानते हैं। किन्तु उसके होल इण्डिया की सीमा शायद एक ज़िले की सीमा के बराबर ही हो। ज़िले भर के लोग उसके नाम से परिचित अवश्य थे।

लुट्टन के माता-पिता उसे नौ वर्ष की उम्र में ही अनाथ बनाकर चल बसे थे। सौभाग्यवश शादी हो चुकी थी, वरना वह भी माँ-बाप का अनुसरण करता। विधवा सास ने पाल-पोस कर बड़ा किया। बचपन में वह गाय चराता, धारोष्ण दूध पीता और कसरत किया करता था। गांव के लोग उसकी सास को तरह-तरह की तकलीफ़ दिया करते थे; लुट्टन के सिर पर कसरत की धुन लोगों से बदला लेने के लिए ही सवार हुई थी। नियमित कसरत ने किशारोवस्था में ही उसके सीने और बाँहों को सुडौल और मांसल बना दिया था। जवानी में क़दम रखते ही वह गांव में सबसे अच्छा पहलवा समझा जाने लगा। लोग उससे डरने लगे और वह दोनो हाथो को दोनों ओर 45 डिग्री की दूरी पर फैलाकर, पहलवानों की भाँति चलने लगा। वह कुश्ती भी लड़ता था।

एक बार वह 'दंगल' देखने श्यामनगर मेला गया। पहलवानों की कुश्ती और दाँव-पेंच देखकर उससे नहीं रहा गया। जवानी की मस्ती और ढोल की ललकारती हुई आवाज़ ने उसकी नसों में बिजली उत्पन्न कर दी। उसने बिना कुछ सोचे-समझे दंगल में 'शेर के बच्चे' को चुनौती दे दी।
'शेर के बच्चे' का असल नाम चान्द सिंह था। वह अपने गुरु पहलवान बादल सिंह के साथ, पंजाब से पहले-पहल श्यामनगर मेले में आया था। सुन्दर, जवान, अंग-प्रत्यंग से सुन्दरता टपक पड़ती थी। तीन दिनों में ही पंजाबी और पठान पहलवानों के गिरोह के अपनी जोड़ी और उम्र के सभी पट्ठो को पछाड़कर उसने 'शेर के बच्चे' की टायटिल प्राप्त कर ली थी। इसलिए वह दंगल के मैदान में लंगोट लगाकर एक अजीब किलकारी भरकर छोटी दुलकी लगाया करता था। देशी नौजवान पहलवान, उससे लड़ने की कल्पना से भी घबराते थे। अपनी टायटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए ही चान्द सिंह बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था।
श्यामनगर के दंगल और शिकार—प्रिय वृद्ध राजा साहब उसे दरबार में रखने की बात कर ही रहें थे के लुट्टन ने शेर के बच्चे को चुनौती दे दी। सम्मान प्राप्त चांद सिंह पहले तो किंचित, उसकी स्पर्धा पर मुस्कराया। फिर बाज की तरह उस पे टूट पड़ा।
शांत दर्शको की भीड़ में खलबली मच गयी—'पागल है पागल, मरा—ऐं! मरा—मरा!... पर वाह रे बहादुर! लुट्टन बड़ी सफाई से आक्रमण को संभालकर निकल कर उठ खड़ा हुआ और पैंतरा दिखाने लगा। राजा साहब ने कुश्ती बंद करवाकर लुट्टन को अपने पास बुलवाया और समझाया। अंत में, उसकी हिम्म्त की प्रशंषा करते हुए, दस रूपये का नोट देकर कहने लगे— "जाओ, मेला देखकर घर जाओ !...

01. दंगल देखने कौन गया था ?

(क) राजा साहब

(ख) चाँद सिंह

(ग) मैनेजर साहब

(घ) लुट्टन

02. ' शेर के बच्चे ' का टाइटल किसके पास था ?

(क) लुट्टन

(ख) बादल सिंह

(ग) चाँद सिंह

(घ) राजा साहब

03. राजा साहब ने लुट्टन को मेला देखकर घर जाने की सलाह क्यों दी ?

(क) क्योंकि लुट्टन बच्चा था

(ख) क्योंकि लुट्टन को कुश्ती नहीं आती थी

(ग) क्योंकि लुट्टन चाँद सिंह को हरा देता

(घ) क्योंकि लुट्टन बहुत डरपोक था

04. चाँद सिंह कहाँ से आया था ?

(क) श्यामनगर

(ख) पंजाब

(ग) पठानकोट

(घ) विदेश से

05. लुट्टन ने शेर के बच्चे को क्यों चुनौती दी ?

(क) क्योंकि लुट्टन को राजदरबार में जाना था

(ख) जानबुझ कर

(ग) ढोल की ललकारती आवाज सुनकर

(घ) क्योंकि वह महावीर था

06. चाँद सिंह बीच-बीच में दहाड़ क्यों रहा था ?

(क) क्योंकि उसे दहाड़ना अच्छा लगता था

(ख) अपनी टाइटल को प्रमाणित करने के लिए

(ग) अपने अहंकार के कारण

(घ) शेर होने के कारण

07. किसे दंगल और शिकार प्रिय था ?

(क) वृद्ध राजा को

(ख) लुट्टन को

(ग) मैनेजर को

(घ) राजकुमार को

08. राजा ने लुट्टन को क्या इनाम दिया ?

(क) पचास रुपये

(ख) राजदरबार में जगह

(ग) शेर का खिताब

(घ) दस रुपए

09. लुट्टन के नसों में बिजली क्यों उत्पन्न हो गई ?

(क) राज्य को बचाने के लिए

(ख) चाँद सिंह की ललकार को सुनकर

(ग) ढोल की आवाज को सुनकर

(घ) इनाम नहीं मिलने के कारण

10. चाँद सिंह का गुरु कौन था ?

(क) बादल सिंह

(ख) लुट्टन सिंह

(ग) बहादुर

(घ) पठान

2. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू

रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्रायः हुई दुपहर :-
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
"मैं तोड़ती पत्थर।"

01. प्रस्तुत कविता में किसका चित्रण है ?
(क) इलाहाबाद का
(ख) पत्थर का
(ग) मजदूर का
(घ) सड़क का

02. कविता में किस ऋतु का उल्लेख है ?
(क) पावस
(ख) शरद
(ग) वसंत
(घ) ग्रीष्म

03. सीकर शब्द का क्या अर्थ है ?
(क) पानी
(ख) पसीना
(ग) धूप
(घ) लू

04. काव्यांश में कौन सा रस है ?

(क) करुण

(ख) शांत

(ग) रौद्र

(घ) वीभत्स

05. गुरु हथौड़ा हाथ में कौन अलंकार है ?

(क) रुपक

(ख) यमक

(ग) अनुप्रास

(घ) श्लेष

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए।

चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।
देखा चींटी को?
उसके जी को?
भूरे बालों की सी कतरन,
छुपा नहीं उसका छोटापन,
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भर
विचरण करती, श्रम में तन्मय
वह जीवन की तिनगी अक्षय।
वह भी क्या देही है, तिल-सी?
प्राणों की रिलमिल झिलमिल-सी।
दिनभर में वह मीलों चलती,
अथक कार्य से कभी न टलती।

I. कवि ने चींटी को श्रमजीवी क्यों कहा है?

i. वह दूसरों के श्रम पर जीती है।

ii. वह दूसरों से श्रम करने की प्रेरणा लेती है।

iii. वह सदैव श्रम में लीन रहती है।

iv. वह दूसरों को श्रम करने की प्रेरणा देती है।

II. 'भूरे बालों की सी कतरन' - पंक्ति के माध्यम से कवि ने किस ओर संकेत किया है -

i. चींटी के श्रमजीवी होने की ओर।

ii. चींटी के भूरे बालों की ओर।

iii. चींटी के बाल न होने की ओर।

iv. चींटी के लघु आकार की ओर।

III. 'वह जीवन की तिनगी अक्षय' - पंक्ति का आशय है -

i. बहुत दुखी होना

ii. बहुत क्रोधी होना

iii. उत्साह से भरपूर होना

iv. जीवन में चिंगारी जैसा चमकदार होना

IV. काव्यांश में चींटी की किस विशेषता का पता चलता है -

i. वह सुंदर नागरिक है

ii. वह अथक परिश्रम करने वाली है

iii. वह चिंगारी जैसी है

iv. वह तिल के समान है

V. 'भूरे बालों की सी कतरन' - पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?

i. उपमा अलंकार

ii. उत्प्रेक्षा अलंकार

iii. रूपक अलंकार

iv. अनुप्रास अलंकार

3. कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए।

a. पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्त्व किस बात का है?

a. लोगों को विश्वास में लाने का

b. दिखावा करने का

c. सभी

d. समसामयिक घटनाओं की जानकारी

b. स्वतंत्र पत्रकार किसे कहा जाता है?

a. किसी विशेष एक समाचार पत्र से संबंध नहीं होता। ऐसे पत्रकार भुगतान के आधार पर कार्य करते हैं।

b. ऐसा पत्रकार जो किसी समाचार संगठन में काम करता है और नियमित वेतन पाता है।

c. सीमित या कम समय के लिए काम करने वाला। इन्हें प्रकाशित सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक दिया जाता है।

d. संचार प्रक्रिया में संदेश को प्राप्त करने वाला जो सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया करता है।

c. आलेख का मूल उद्देश्य नही है?

a. समाचार देना

b. ज्ञान का विस्तार

c. मनोरंजन करना

d. जानकारी देना

d. बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को कहते हैं-

a. लेखक

b. एंकर

c. संपादक

d. संवाददाता

e. निम्न में कौन सा अखबार केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है?

a. प्रभासाक्षी

b. भास्कर

c. वेबदुनिया

d. हिंदुस्तान

4. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

फिर हम परदे पर दिखलाएंगे
फुल हुई आँख काँ एक बडी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा हैं आप उसे उसकी अपगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश

दर्शक

धीरज रखिए

देखिए

हमें दोनों को एक सा रुलाने हैं

आप और वह दोनों

(कैमरा

बस् करो

नहीं हुआ

रहने दो

परदे पर वक्त की कीमत है)

अब मुसकुराएँगे हम

आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम

(बस थोड़ी ही कसर रह गई)

धन्यवाद!

I. बस थोड़ी सी कसर रह गई पंक्ति का क्या आशय है ?
   i. कार्यक्रम पूरा नहीं हो पाया
   ii. वक्त बीत गया
   iii. दर्शक को नहीं रुला पाए
   iv. दर्शक और अपाहिज दोनों को एक साथ नहीं रुला पाए

II. फूली हुई आँख की तस्वीर क्या दिखाती है ?
   i. अपाहिज की बेबसी
   ii. अपाहिज की खुशी
   iii. अपाहिज का दर्द
   iv. दर्शकों की लाचारी

III. साक्षात्कारकर्ता के अनुसार कार्यक्रम कैसा था ?
   i. कारोबार के उद्देश्य से
   ii. सामाजिक उद्देश्य से युक्त
   iii. संवेदनशीलता दिखाने वाला
   iv. समाज की सच्चाई दिखानेवाला

IV. कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्या था?
   i. दर्शक और अपाहिज को एक साथ रुलाना
   ii. समाज की सच्चाई दिखाना
   iii. अपाहिज की पीड़ा को दिखाना

iv. दर्शक का मनोरंजन करना

V. इस कविता के कवि कौन हैं?

i. मुक्तिबोध

ii. शमशेर

iii. रघुवीर सहाय

iv. महादेवी वर्मा

5. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निःस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय से ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता, तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही समाप्त हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

I. गाँव में ऐसा क्या हो गया था कि अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी?

i. मलेरिया का प्रकोप

ii. अतिवृष्टि का प्रकोप

iii. हैजे का प्रकोप

iv. हैजे, मलेरिया रूपी महामारी का प्रकोप

II. कहानी में वातावरण-निर्माण के लिए लेखक ने चाँदनी रात के स्थान पर अंधेरी रात का उल्लेख क्यों किया है?

i. महामारी की विभीषिका दर्शाने के लिए

ii. निराशा दर्शाने के लिए

iii. बीमारों की दशा बताने के लिए

iv. गरीब की दशा बताने के लिए

III. गद्यांश के आधार पर लेखक की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

i. मानवीकरण

ii. सशक्त अभिव्यक्ति

iii. आलंकारिक चित्रात्मक भाषा

iv. अलंकारयुक्त, सशक्त खड़ी बोली

IV. सिसकियाँ और आहें किसके दुख का वर्णन कर रही है?

i. गाँव वालों की

ii. किसानों की

iii. बीमारों की

iv. आम व्यक्तियों की

V. "भावुक तारा" किसका प्रतीक है?

i. चमकता तारा
ii. उत्साही व्यक्ति
iii. उत्साही एवं परोपकारी व्यक्ति
iv. भावुक व्यक्ति

6. निम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए:

a. **सिल्वर वेडिंग** कहानी के केंद्र में क्या है?

a. वेडिंग ऐनिवर्सरी

b. लेखक

c. चड्ढा

d. नई नौकरी

b. **सिल्वर वेडिंग** कहानी में यशोधर बाबू का तकिया-कलाम क्या है?

a. समहाऊ इम्प्रापर

b. इन्सिस्ट

c. अफोर्ड

d. किशनदा

c. जूझ पाठ के अनुसार लेखक क्यों पढ़ना चाहता था?

a. कोल्हू चलाने के लिए

b. नौकरी के लिए

c. खेती के लिए

d. दादा के लिए

d. **जूझ** पाठ के लेखक के पिता का क्या नाम था?

a. आनंदा

b. मंत्री

c. रतनाप्पा

d. देसाई

e. मुअनजो-दड़ो किस काल का एक शहर है? **[अतीत में दबे पाँव]**

a. पाषाण काल

b. आदि काल

c. ताम्र काल

d. आधुनिक काल

f. मोहनजोदड़ो के सबसे ऊंचे चबूतरे पर क्या है? **[अतीत में दबे पाँव]**

a. कमरें

b. बौद्ध स्तूप

c. आकाश

d. रसोई

g. दुनिया की प्राचीन सभ्यता होने के भारत के दावे को _____ का वैज्ञानिक आधार मिल गया। **[अतीत में दबे पाँव]**

a. इतिहास

b. विज्ञान

c. समाज

d. पुरातत्व

h. **डायरी के पन्ने** पाठ में लेखिका के पिता को कहाँ से बुलावा आया था?

a. अस्पताल

b. पुलिस चौकी

c. मिस्टर वान दान

d. ए० एस० एस०

i. **डायरी के पन्ने** पाठ के अनुसार लेखिका के लिए दूसरा सदमा क्या था?

a. माता का बुलावा

b. मार्गोट का बुलावा

c. पिता का बुलावा

d. युद्ध

j. स्मृतियाँ मेरे लिए पोशाकों की तुलना में ज़्यादा मायने रखती हैं।
प्रस्तुत कथन किसका है? **[डायरी के पन्ने]**

a. मार्गोट

b. ऐन फ्रैंक

c. मिस्टर वान दान

d. हैलो

खंड-ब वर्णात्मक प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लिखिये:

a. **भारतीय समाज में अंधविश्वास** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

b. **स्वदेश-प्रेम** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

c. **चुनाव और लोकतंत्र** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

8. आपने लोकसभा चैनल पर कुछ दिन संसद की कार्यवाही देखी। कुछ विदवतापूर्ण भाषणों के बीच हो-हल्ला और अन्य प्रकार की बाधाओं को देखकर आपको कैसा लगा? अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए अध्यक्ष, लोक सभा, संसद भवन, नई दिल्ली को पत्र लिखिए।

OR

आपके विधायक चुनाव जीतने के बाद आपके क्षेत्र में नहीं आए। क्षेत्र में विकास का कोई काम नहीं हुआ। सड़क, बिजली, पानी की समस्याएँ ज्यों-की-त्यों हैं। क्षेत्र की स्थिति से की याद दिलाते हुए विधायक को पत्र लिखिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

   a. कहानी का नाट्य- रूपांतरण करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

   OR

   कविता के किन प्रमुख घटको का ध्यान रखना चाहिए?

   b. कहानी लेखन में कथानक के पत्रों का संबंध स्पष्ट कीजिए।

   OR

   कहानी के तत्वों की पुष्टि करे।

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

   a. विशेष लेखन में **डेस्क** की क्या भूमिका होती है?

   OR

   भारत में पहला छापाखाना कब खोला गया?

   b. रेडियो की लोकप्रियता के क्या कारण हैं?

   OR

   संपादन के दो सिद्धांत बताइए।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

   a. परदे पर वक्त की कीमत है कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है? कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर बताइए।

   b. निम्नलिखित काव्यांश का भाव-सौंदर्य बताइए –
   बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
   कि जैसे धुल गई हो।

   c. कालिदास के **रघुवंश** महाकाव्य में पत्नी (इंदुमती) के मृत्यु-शोक पर **अज** तथा निराला की **सरोज-स्मृति** में पुत्री (सरोज) के मृत्यु-शोक पर पिता के करुण उद्‌गार निकले हैं। उनसे भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

   a. **सहर्ष स्वीकारा है** कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

   b. रुबाइयाँ और गज़ल का शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता

है?

c. **धूत कहौ...** वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

b. **काले मेघा पानी दे** के आधार पर जीजी की दृष्टि में त्याग और दान को परिभाषित कीजिए।

c. श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जातिप्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। स्पष्ट करें।

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. भगत जी बाज़ार को सार्थक व समाज को शांत कैसे कर रहे हैं?

b. पलहवान की ढोलक कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

c. किसका वतन कहाँ है- वह जो कस्टम के इस तरफ़ है या उस तरफ़। **नमक** पाठ के आधार पर अर्थ समझाइए।

12 Hindi Core SP-07

Class 12 - हिंदी कोर

Solution

खंड-अ वस्तुपरक प्रश्न

1. 01. (ग) कभी भी नहीं
   02. (क) पेशा परिवर्तन की अनुमति का नहीं होना
   03. (घ) व्यक्ति की स्वेच्छा पर
   04. (ख) हानिकारक
   05. (ख) अरुचिकर कार्य
   06. (क) उपयुक्त पेशा नहीं होने के कारण
   07. (घ) वह एक ही पेशे में बँधा रहता है
   08. (क) अपनी मर्जी की नौकरी नहीं होने की स्थिति में
   09. (ख) तकनीक में बदलाव आने के कारण
   10. (ग) श्रम विभाजन में

   OR

   01. (घ) लुट्टन
   02. (ग) चाँद सिंह
   03. (क) क्योंकि लुट्टन बच्चा था
   04. (ख) पंजाब
   05. (ग) ढोल की ललकारती आवाज सुनकर
   06. (ख) अपनी टाइटल को प्रमाणित करने के लिए
   07. (क) वृद्ध राजा को
   08. (घ) दस रुपए
   09. (ग) ढोल की आवाज को सुनकर
   10. (क) बादल सिंह

2. I. (ग) मजदूर का
   II. (घ) ग्रीष्म
   III. (ख) पसीना
   IV. (क) करुण

V. (ग) अनुप्रास

OR

I. (iii) वह सदैव श्रम में लीन रहती है।
II. (iv) चींटी के लघु आकार की ओर।
III. (iv) जीवन में चिंगारी जैसा चमकदार होना
IV. (ii) वह अथक परिश्रम करने वाली है
V. (i) उपमा अलंकार

3. कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए।

a. (d) समसामयिक घटनाओं की जानकारी
Explanation: पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्त्व समसामयिक घटनाओं की जानकारी पर है।
b. (a) किसी विशेष एक समाचार पत्र से संबंध नहीं होता। ऐसे पत्रकार भुगतान के आधार पर कार्य करते हैं।
Explanation: ऐसा पत्रकार किसी अखबार विशेष से न बँधकर भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।
c. (c) मनोरंजन करना
Explanation: आलेख का मूल उद्देश्य मनोरंजन करना नहीं है
d. (d) संवाददाता
Explanation: बीट की रिपोर्ट लेखन करने वाले को संवाददाता कहते हैं।
e. (a) प्रभासाक्षी
Explanation: प्रभासाक्षी नाम का अखबार केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। इसका प्रिन्ट रूप नहीं आता है।

4. I. (iv) दर्शक और अपाहिज दोनों को एक साथ नहीं रुला पाए
II. (i) अपाहिज की बेबसी
III. (iv) सामाजिक उद्देश्य से युक्त
IV. (i) दर्शक और अपाहिज को एक साथ रुलाना
V. (iii) रघुवीर सहाय

5. I. (iv) हैजे व मलेरिया रुपी महामारी का प्रकोप
II. (i) महामारी की विभीषिका दर्शाने के लिए
III. (iv) अलंकारयुक्त, सशक्त खड़ी बोली
IV. (i) गाँव वालों की
V. (iii) उत्साही एवं परोपकारी व्यक्ति

6. निम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए:

a. (a) वेडिंग ऐनिवर्सरी

Explanation: सिल्वर वेडिंग कहानी यशोधर पंत की शादी की पच्चीसवीं सालगिरह के आस-पास घूमती है। इस कहानी में पुराने और आधुनिक विचार और मान्यता के बीच एक मार्मिक द्वन्द्व है।

b. (a) समहाऊ इम्प्रापर

Explanation: तकिया-कलाम, वह शब्द या वाक्यांश जो कोई व्यक्ति अपनी हर बात में जोड़ता है। कहानी में यशोधर बाबु का तकिया-कलाम 'समहाऊ इम्प्रापर' है। वे अपनी हर बात में इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

c. (b) नौकरी के लिए

Explanation: पाठ के अनुसार लेखक नौकरी के लिए पढ़ना चाहता था, क्योंकि उसे पता था कि खेती-बाड़ी करने से कुछ खास फायदा नहीं होने वाला है। इसीलिए वो नौकरी करके कमाना चाहता था।

d. (c) रतनाप्पा

Explanation: लेखक के पिता का नाम रतनाप्पा था। लेखक अपने पिता से बहुत डरता था।

e. (c) ताम्र काल

Explanation: मुअनजो-दड़ो जिसे अब मोहनजोदड़ो के नाम से जाना जाता है, वह ताम्र काल का है। ताम्र काल के शहरों में मोहनजोदड़ो सबसे बड़ा और उत्कृष्ट शहर माना गया है।

f. (b) बौद्ध स्तूप

Explanation: मोहनजोदड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे पर बौद्ध स्तूप है, जो मोहनजोदड़ो की सभ्यता के समाप्त हो जाने के बाद बनाया गया था।

g. (d) पुरातत्व

Explanation: सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई और उनसे प्राप्त तमाम वस्तुओं से भारत को दुनिया की प्राचीन सभ्यता होने का पुरातत्व का वैज्ञानिक आधार मिल गया।

h. (d) ए० एस० एस०

Explanation: पाठ के अनुसार लेखिका के पिता को ए० एस० एस० से बुलावा आया था। इस बुलावे से परिवार के सभी लोग चिंतित थे।

i. (b) मार्गोट का बुलावा

Explanation: पाठ के अनुसार लेखिका के लिए दूसरा सदमा उसकी बहन मार्गोट का अचानक सुरक्षित स्थान पर अकेले चले जाना था।

j. (b) ऐन फ्रैंक

Explanation: प्रस्तुत कथन पाठ की लेखिका ऐन फ्रैंक का है। उनके अनुसार स्मृतियों का महत्व किसी भी चीज से ऊपर है।

खंड-ब वर्णात्मक प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लिखिये:

a. **भारतीय समाज में अंधविश्वास**

जीवन को व्यवस्थित करने के लिए मानव ने नियमों की संकल्पना की जिन्हें 'धर्म' की संज्ञा दी गई। इन नियमों का उद्देश्य मानवजीवन को सुखी, संपन्न व व्यवस्थित बनाना था। समय बदलने के साथ-साथ कुछ नियम अप्रासंगिक हो गए और वे अंधविश्वास का रूप धारण करने लगे। आधुनिक युग में ये अंधविश्वास प्रगति में बाधक सिद्ध हो रहे हैं। भारतीय समाज के अनेक विश्वास जीवन की गतिशीलता के साथ न चलने के कारण पंगु हो गए हैं। इन अंधविश्वासों में धर्म की रूढिबद्धता, आभूषण-प्रेम, जादू-टोने में विश्वास, देवी-देवताओं के प्रति अबौद्धक श्रद्धा आदि सामाजिक कुरीतियाँ हैं। ये कुरीतियाँ आज देश की प्रगति में बाधक सिद्ध हो रही हैं। उदाहरणस्वरूप हमारे धर्म में कर्म के अनुसार जाति-प्रथा का विधान किया गया, परंतु बाद में उसे जन्म के आधार पर मान लिया गया। आज उसकी प्रासंगिकता समाप्त हो गई है, परंतु आरक्षण, जातिगत श्रेष्ठता के भाव संघर्ष का कारण बने हुए हैं। इसी तरह मुसलमानों के आगमन से देश में छुआछूत की भावना को बढ़ावा मिला।

युद्धों में गिरफ्तार लोगों को मुसलमानों के हाथ का खाना पड़ता था, फलत: हिंदू समाज उन्हें बहिष्कृत कर देता था या उन्हें अस्पृश्य मान लिया जाता था। उनके साथ भोजन करना, उठना-बैठना आदि तक निषेध कर दिया गया। इससे समाज खोखला हुआ। इसी प्रकार भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग जादू-टोने में विश्वास रखता है। हालाँकि मीडिया के प्रसार व बौद्धिकता बढ़ने से जादू-टोने का जाल कम होने लगा है। फिर भी यदा-कदा नरबलि, सती–प्रथा आदि की घटनाएँ प्रकाश में आती ही रहती हैं। इसके अतिरिक्त समाज में अनेक तरह के अपशकुन अब भी प्रचलित हैं, जैसे बिल्ली द्वारा रास्ता काटा जाना, कोई काम शुरू करते समय किसी को छींक आना, पीछे से आवाज देना, चलते हुए अँधेरा होना आदि।

कई लोग इनके कारण अपने महत्वपूर्ण काम तक रोक देते हैं। हमारे समाज का सबसे बड़ा अंधविश्वास समग्र रूप में परंपराओं के प्रति अंधभक्ति है। आज भी हम अनेक अव्यावहारिक बातों से जुड़े हुए हैं। फलित ज्योतिष विद्या के नकली धनी इस प्रकार के विश्वास की आड़ में अपना पेट भरते हैं। लड़की के जन्म को अशुभ मानना, विवाह में सामर्थ्य से अधिक व्यय आदि भी इन्हीं अंधविश्वासों की उपज है। अब तो धर्मगुरुओं की एक ऐसी जमात' तैयार हो चुकी है जो आस्था के नाम पर जनता को भ्रमित कर रहे हैं। मीडिया भी इसमें पूरे मनोयोग से सहयोग कर रही है।जब अंधविश्वासों के माध्यम से भ्रमित होने से बचाने वाले ही जनता को भ्रमित करने में सहायक हों तब किया भी क्या जा सकता है?

आवश्यकता इस बात की है कि धर्म के वास्तविक रूप को समझकर आचरण करें और अपनी प्रगति करें और जो भी धर्म आपके प्रगति में रुकावट लाए, वो कोई धर्म नहीं हो सकता। समाज को चाहिए कि नए जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर चले और अंध परंपराओं को सदा के लिए दफ़न कर दे।

b. **स्वदेश-प्रेम**

देश-प्रेम की भावना स्वाभाविक है। मनुष्य अपने देश की हर वस्तु, व्यक्ति, साहित्य, संस्कृति यहाँ तक कि उसके कण-कण से प्यार करता है। यह हृदय की सच्ची भावना है जो केवल सच्चाई व महानता को स्पष्ट करती है।सच्चा देश प्रेम बहुत ही कम देखने को मिलता है, और बढ़ते समय के साथ इसमें गिरावट आ रही है।

देश-प्रेम की भावना से प्रभावित होकर श्री राम ने सोने की लंका को धूल के समान समझा और विभीषण को लंका का राजा बना दिया। इसी तरह अन्य महान पुरुषों ने अपनी जन्मभूमि भारत के प्रति अपने प्राण न्योछावर करने में

हिचकिचाहट नहीं दिखाई। रानी लक्ष्मीबाई, कुँवर सिंह, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर, वीर सावरकर आदि न जाने कितने देश-प्रेमी थे जो आज हमारे लिए प्रेरणा बने हुए हैं।

कुछ लोग स्वदेश-प्रेम को स्थूल रूप में लेते हैं। वे भारत माता की मूर्ति की पूजा करते हैं या 'भारत माता की जय' बोलने से अपने प्रेम की अभिव्यक्ति मान लेते हैं। यह किसी ढोंग से कम नहीं है,और ये अपने देश के प्रति एक धोखा है। देश-प्रेम सूक्ष्म भाव है जो हम अपने कार्यों से व्यक्त करते हैं। जो देशवासी अपने कर्तव्य देश के प्रति पूर्ण करता है, वही देश-प्रेमी है। स्वदेश-प्रेमी कभी देश के विघटन की बात नहीं करता। वह मानसिक व भौतिक शक्ति में वृद्धि का प्रयास करता है। साथ ही, देश के अन्यायपूर्ण शासनतंत्र को उखाड़ फेंकना भी देश-प्रेमी का कर्तव्य है, देश पर कोई संकट आए तो प्राण न्योछावर करने वाला ही देश-प्रेमी हो सकता है।

c. **चुनाव और लोकतंत्र**

'लोकतंत्र' दो शब्दों 'लोक' और 'तंत्र' के मेल से बना है, जिसका अर्थ है-लोगों का तंत्र अर्थात जनता का शासन।ऐसा शासन जो जनता के द्वारा ही निर्धारित किया जाता है। शासन की इस प्रणाली में लोग अपनी शासन-प्रणाली खुद बनाते हैं। विश्व की सभी प्रणालियों में लोकतंत्र सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। लोकतंत्र को पारिभाषित करते हुए अब्राहम लिंकन ने कहा था, "लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन है।" मनुष्य ने घुमंतू जीवन छोड़कर जब से समाज में रहना शुरू किया, उसी समय से उसे शासन की आवश्यकता महसूस हुई ताकि समाज में शांति बनी रहे।

हमारे देश ने स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद आज तक इसी व्यवस्था को अपनाया हुआ है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहाँ लोकतंत्र को शक्तिशाली बनाए रखने के लिए हर पाँच वर्ष बाद चुनाव कराने का प्रावधान है ताकि जनता अपनी इच्छानुसार नेताओं का चयन कर सके। चुनाव ही लोकतंत्र को सबल और सार्थक बनाते हैं। विगत कुछ वर्षों में भारतीय राजनीति में गिरावट आई है।अब हमारे नेतागण अशिक्षित समाज को अपना निशाना बनाते हैं, और उनके वोटों को पैसों से अथवा अन्य लालच देकर अपने पक्ष में कर लेते हैं।

नेताओं का चरित्र इतना गिर गया है कि वे स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण एक से दिखते हैं। चुनावों में जीत हासिल करने के लिए वे धनबल, बाहुबल के अलावा सभी तरह के हथकंडे अपनाते हैं और अपने कार्यकाल में घोटाले तथा अन्य अनैतिक कार्यों में संलिप्त रहते हैं। ऐसे नेता लोकतंत्र और राजनीति दोनों के लिए काले धब्बे के समान हैं। इसके बाद भी यहाँ समय-समय पर चुनाव होना और सरकार बनना लोकतंत्र की मजबूती और उसके उज्ज्वल भविष्य का प्रमाण है। लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए मतदाताओं को लालच और स्वार्थ त्यागकर निष्पक्ष होकर मतदान करना चाहिए।

8. परीक्षा भवन
   नई दिल्ली
   दिनांक: 22 नवंबर 2019

   माननीय अध्यक्ष

लोक सभा
संसद भवन
नई दिल्ली।

विषय- लोक सभा में सांसदों के गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान लोक सभा में होने वाली कार्यवाही के दौरान उत्पन्न शोरगुल तथा अन्य बाधाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

पिछले दिनों मैं 'लोकसभा' चैनल पर प्रसारित की जाने वाली संसदीय कार्यवाही देख रहा था। मेरे दिमाग पर संसद के गरिमापूर्ण व्यवहार की छाप थी, परंतु टी०वी० पर जब यथार्थ का ज्ञान हुआ तो लोकतंत्र से विश्वास ही हिल गया। कुछ सांसद बहुत विद्वान थे। देश की समस्याओं के विषय में उनका ज्ञान अच्छा था, परंतु अधिकतर सांसद शोर ही मचा रहे थे। उनका व्यवहार तो उन्हें सांसदों की श्रेणी में रहने का अधिकार नहीं देता। उनके शोर-शराबे से संसद की कार्यवाही कई बार स्थगित की गई। वस्तुतः वे लोग केवल शोरगुल करने और संसद के कार्यों में बाधा उत्पन्न करने का कार्य करते हैं। इन कार्यों से देश का धन व समय खराब होता है। इससे अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों में देरी भी हो जाती है। ऐसे व्यक्ति न ही सांसद बनने के काबिल हैं, और न ही संसद भवन में जाने के।

आपसे निवेदन है कि इस तरह बाधा पहुँचाने वालों से सख्ती से निपटें तथा उन पर संसद में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाएँ जिससे धन एवं समय की बर्बादी रोकी जा सके। इसके अतिरिक्त देश की जनता पर इन सभी का कुप्रभाव पड़ता है।

धन्यवाद

भवदीय

गोविन्द वर्मा

OR

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक: 16 जून 2019

माननीय विधायक महोदय
बिजवासन विधान सभा क्षेत्र
साध नगर।

विषय- चुनावी वायदों को याद दिलाने के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम मैं आपकी विधान सभा चुनाव के समय किए गए वायदों की याद दिलाना चाहता हूँ। आपने इस क्षेत्र से

तीन वर्ष पहले विधान सभा का चुनाव लड़ा तथा जनता के समक्ष विकास के अनेक वायदे किए। आपने पक्की सड़कें बनवाने, पानी की आपूर्ति बढ़ाने, बिजली की आपूर्ति करने, उद्योग लगवाने आदि के अनेक वायदे जनता के समक्ष किए तथा जनता ने उन पर भरोसा करके आपको अच्छे मत देकर विधान सभा में भेजा, परंतु आपने तो श्री कृष्ण जैसा कार्य किया। मथुरा जाकर गोकुल गाँव को भूल ही गए। आम जनता को पानी नहीं मिलता। क्षेत्र में गलियाँ व सड़कें टूटी-फूटी हैं। इनमें जहाँ-तहाँ जो गड्ढे बने हुए हैं, उनसे आए दिन दुर्घटनाएँ होती हैं। गली की लाइटें तो गायब ही हो चुकी हैं तथा अँधेरे को ही लोगों ने अपनी नियति मान लिया है। भयंकर गरमी में बिजली यदा-कदा ही आती है। कानून-व्यवस्था भी खराब है। अधिकारी आम जनता की कोई सुनवाई नहीं करते। आपने कभी क्षेत्र की सुधि ही नहीं ली।अपने क्षेत्र में विकास करने की बात तो दूर, आप तो जीतने के बाद कभी अपने क्षेत्र में आये ही नहीं और जब तक आप क्षेत्र का भ्रमण नहीं करेंगे, आप हमारी समस्याओं का भी समाधान नहीं कर पाएँगे।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप चुनावी समय में किए गए वायदों तथा अपने कर्तव्यों को पूरा करें और जनता की समस्याएँ सुलझाने की कृपा करें। अगर आप अभी जनता के लिए काम करते हैं तो आगे के चुनाव में भी आपको जनता का समर्थन मिलेगा।

धन्यवाद

भवदीय

गोविन्द मिश्रा

9. निम्नलिखित में से 2 प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

a. **कहानी का नाट्य रूपांतर करते समय इन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना चाहिये-**

   i. कहानी एक ही जगह पर स्थित होनी चाहिये।
   ii. कहानी में संवाद नहीं होते और नाट्य संवाद के आधार पर आगे बढता है। इसलिये कहानी मे संवाद का समावेश करना जरूरी है।
   iii. कहानी का नाट्य रूपांतर करने से पहले उसका कथानक बनाना बहुत जरूरी है।
   iv. नाट्य मे हर एक पत्र का विकास, कहानी जैसे आगे बढती है, वैसे होता है इसलिये कहानी का नाट्य रूपांतर करते वक्त पात्र का विवरण करना बहुत जरूरी होता है।
   v. एक व्यक्ति कहानी लिख सकता है, पर जब नाट्य रूपांतर कि बात आती है, तो हर एक समूह या टीम कि जरूरत होती है।

b. कविता भाषा में होती है इसलिए भाषा का सम्यक ज्ञान जरूरी है भाषा सब्दो से बनती है शब्दों का एक विन्यास होता है जिसे वाक्य कहा जाता है भाषा प्रचलित एवं सहज हो पर संरचना ऐसी कि पाठक को नई लगे कविता में संकेतो का बड़ा महत्व होता है इसलिए चिह्नों (, !,।) यहाँ तक कि दो पंक्तियों के बीचका खाली स्थान भी कुछ कह रहा होता है वाक्य-गठन की जो विशिष्ट प्रणालियाँ होती हैं, उन्हें शैली कहा जाता है इसलिए विभिन्न काव्य-शैलियों का ज्ञान भी जरुरी है। शब्दों का चयन, उसका गठन और भावानुसार लयात्मक अनुशासन वे तत्व हैं जो जीवन के अनुशासन की लिए जरुरी हैं।

c. देशकाल, स्थान और परिवेश के बाद कथानक के पत्रों पर विचार करना चाहिए। हर पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। कहानी में वह विकसित भी होता है या अपना स्वरूप भी बदलता है। कहानीकार के सामने पत्रों का स्वरूप जितकारण पत्नारों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्त्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। इसके स्पष्ट होगा उतनी ही आसानी उसे पत्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी। इसके अंतगर्त पात्रो के अंत संबंध पर भी विचार किया जाना चाहिए। कौन-से पात्र की किस किस परिस्थिति में क्या प्रतिक्रिया होगी, यह भी कहानीकार को पता होना चाहिए।

d. आकार की लघुता, संवेदना की एकता, सत्य का आधार या कल्पना, रोचकता, मनोवैज्ञानिकता और सक्रियता, पत्रों की न्यूनता, स्म्क्लन्त्र्य (स्थान, काल और पात्र), जीवन की घटना अथवा स्थिति विशेष का मार्मिक चित्रण, य्थार्थ्यता, परिस्थिति की सरलता, उद्देश्य की स्पष्टता आदि कहानी की विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं के आधार पर कहानी के छह तत्व निर्धारित किए गए हैं - कथानक या कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र- चित्रण, कथोपकथन, देश-काल-वातावरण, भाषा-शैली और उद्देश्य।

10. निम्नलिखित में से 2 प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

a. विशेष लेखन में "डेस्क" का खास महत्त्व होता है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं ,रेडियो ,टीवी आदि में विशेष लेखन के लिए अलग "डेस्क" होता है और उस पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जैसे समाचारपत्र में बिजनेस कारोबार का अलग डेस्क होता है तो खेल का अलग। इन डेस्कों पर कार्य करने वाले उपसंपादकों और संवाददाताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने -अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ हों।

b. मिशनरियों ने 1556 ई० में भारत में पहला छापाखाना खोला था। यह छापाखाना गोवा में खुला था। छापेखाने को खोलने के पीछे मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य धर्म प्रचार की पुस्तकों को छापना था। समय के साथ मुद्रित माध्यमों में काफी बदलाव आए हैं और यह पहले से बहुत बेहतर हुआ है।

c. रेडियो के लोकप्रियता के कारण निम्नांकित हैं -

- सस्ता व सुलभ साधन
- अन्य कार्य करते हुए भी रेडियो का उपयोग संभव
- व्यापक प्रसार और दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुँच

d. **संपादन के दो सिद्धांत निम्नलिखित हैं -**

1. **निष्पक्षता -** संपादन में निष्पक्षता का तात्पर्य है बिना किसी का पक्ष लिए अपना कार्य करना।
2. **वस्तुपरकता -** संपादन में वस्तुपरकता का तात्पर्य है कि जो हम संपादित कर रहे हैं, वो विषय से जुड़ा है या नहीं ।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. प्रसारण के समय में रोचक सामग्री परोसना ही मीडिया कर्मियों का एकमात्र उद्देश्य होता है। प्रसारण के समय कार्यक्रम को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए वे सभी उचित-अनुचित हथकंडे आजमाते हैं। उन्हें किसी की पीड़ा को कम नहीं बल्कि बढ़ा-चढ़ाकर कुरेद कर दिखाने की आदत होती है। मीडियाकर्मी को सिर्फ व्यावसायिक उद्देश्य पूरा करने से सरोकार रहता है।वे निर्माण की पूरी कीमत वसूल करना चाहते हैं। किसी की पीड़ा को व्यावसायिक रूप देकर वे सामाजिक जिम्मेदारी की पूर्ति का दिखावा मात्र करते हैं।

b. कवि कहता है कि जिस प्रकार ज्यादा काली सिल अर्थात् पत्थर पर थोड़ा-सा केसर डाल देने से वह धुल जाती है अर्थात् उसका कालापन खत्म हो जाता है, ठीक उसी प्रकार काली सिल को किरण रूपी केसर धो देता है अर्थात् सूर्योदय होते ही हर वस्तु चमकने लगती है।

c. निराला की सरोज-स्मृति में पुत्री (सरोज) के मृत्यु-शोक तथा भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें तो श्रीराम का शोक कम प्रतीत होता है क्योंकि निराला की बेटी की मृत्यु हो चुकी थी जबकि लक्ष्मण अभी केवल मूर्छित ही थे अभी भी उनके जीवित होने की संभावना बची हुई थी साथ ही संतान का शोक अन्य किसी शोक से बढ़कर नहीं होता।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. **सहर्ष स्वीकारा है** कविता गजानन माधव मुक्तिबोध के काव्य-संग्रह **भूरी-भूरी ख़ाक धूल** से ली गई है। इसमें कवि ने अपने जीवन में समस्त अनुभवों, सुख-दुख, संघर्ष-अवसाद, उठा-पटक आदि स्थितियों को सहर्ष स्वीकार कर लिया क्योंकि इन सभी के साथ वह अपनी प्रिया का जुड़ाव अनुभव करता है। उसका जो कुछ है वह सब उसकी प्रिया को अच्छा लगता है। कवि अपनी स्वाभिमान युक्त गरीबी, जीवन के गंभीर अनुभव, व्यक्तित्व की दृढ़ता, मन में उठती भावनाएँ, जीवन में मिली उपलब्धियाँ सभी के लिए अपनी प्रिया को प्रेरणा मानता है। कवि को लगता है कि वह अपनी प्रिया के प्रेम के अभाव स्वरूप कमजोर पड़ता जा रहा है। उसे अपना भविष्य अंधकारमय लगता है। वह अंधकारमय गुफा में एकाकी जीवन जीना चाहता है, पर वहाँ भी उसकी प्रिया की यादें साथ रहेंगी।

b. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह मानता है। एक नन्हीं-सी बच्ची अपने भाई के हाथों पर राखी बाँधती है। वह बच्ची रस की पुतली है, उसकी उमंग और चपलता देखते बनती है। उसके हाथ मे जो राखी है, उसके लच्छे से एक चमक निकल रही है, जो आकाश में चमकती बिजली की भंगिमा दे जाती है। दूसरी ओर कवि रक्षाबंधन के दिन आसमान में काले-काले बादलों की छटा को दर्शाता है।

c. हम इस बात से सहमत है कि तुलसी स्वाभिमानी भक्त हृदय व्यक्ति है क्योंकि 'धूत कहौ...' वाले छंद में भक्ति की गहनता और सघनता में उपजे भक्त हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण है, जिससे समाज में व्याप्त जाति-पाँति और दुराग्रहों के तिरस्कार का साहस पैदा होता है। वे कहते हैं कि उन्हें संसार के लोगों की चिन्ता नहीं हैं कि वे उनके बारे में क्या सोचते हैं। तुलसी राम में एकनिष्ठा एवं समर्पण भाव रखकर समाज में व्याप्त दूषित रीति-रिवाजों का विरोध करते है तथा अपने स्वाभिमान को महत्त्व देते हैं।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. लेखिका को भक्तिन का सिर मुंडवाना पसंद नहीं था। लेखिका उसे ऐसा करने के लिए हमेशा मना करती थी परन्तु भक्तिन केश मुँडाने से मना किए जाने पर शास्त्रों का हवाला देते हुए कहती है 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध'। यह बात किस शास्त्र में लिखी है इसका भक्तिन को कोई ज्ञान नहीं था जबकि लेखिका को पता था कि यह उक्ति शास्त्र की न होकर किसी व्यक्ति द्वारा कही गई है परन्तु तर्क देने में पटु भक्तिन की सिर मुंडवाने की आदत को लेखिका बदल नहीं पाई।

b. लेखक को जीजी के अन्धविश्वासों पर तनिक भी विश्वास नहीं था। जीजी कहती थी कि अगर हम इन्द्र भगवान को जल नहीं देंगे तो वे हमें पानी कैसे देंगे, मेढ़क -मंडली पर जल डालना उनको समर्पितअर्घ्य है यदि मनुष्य दान में कुछ देगा नहीं तो पायेगा कैसे? ऋषियों ने भी दान और त्याग की महिमा गाई है। असली त्याग वही है कि जो चीज हमारे पास कम है उसे ही लोक-कल्याण के लिए दे दिया जाये तभी दान का फल मिलेगा।

c. **लेखक कहता है कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जातिप्रथा दोषों से युक्त है। इस विषय में लेखक निम्नलिखित तर्क देता है –**

- जातिप्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा से नहीं होता।
- जाति प्रथा में श्रम विभाजन के साथ साथ श्रमिकों का भी विभाजन किया जाता है।
- यह प्रथा समाज के सदस्यों को ऊंच-नीच वर्गों में बाँट देती है।
- मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता।
- जातिप्रथा के कारण मनुष्य में दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने वे कम काम करने की भावना उत्पन्न होती है
- जातिप्रथा के कारण श्रम विभाजन होने पर निम्न कार्य समझे जाने वाले कार्यों को करने वाले श्रमिक को भी हिंदू समाज घृणित व त्याज्य समझता है।

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. लेखक ने इस निबंध में भगत जी का उदाहरण दिया है जो बाज़ार से काला नमक व जीरा लाकर वापस लौटते हैं। इन पर बाज़ार का आकर्षण काम नहीं करता क्योंकि इन्हें अपनी ज़रूरत का ज्ञान है। इससे पता चलता है कि मन पर नियंत्रण वाले व्यक्ति पर बाजार का कोई प्रभाव नहीं होता। ऐसे व्यक्ति बाजार को सही सार्थकता प्रदान करते हैं। दूसरे, उनका यह रुख समाज में शांति पैदा करता है क्योंकि यह पैसे की पावर नहीं दिखाता। यह प्रतिस्पर्धा नहीं उत्पन्न करता।

b. **कहानी में लुट्टन के जीवन में अनेक परिवर्तन आए -**

i. बचपन में ही लुट्टन के माता-पिता का देहांत हो गया था।
ii. उनका पालन-पोषण उनकी सास ने किया और अपनी सास पर हुए अत्याचारों का बदला लेने के लिए ही उन्होंने पहलवान बनने का निश्चय किया था।

iii. उन्होंने बिना गुरु के कुश्ती सीखी थी। वे ढोल को अपना गुरु मान कर हर समय उसे अपने समीप रखते थे।

iv. अल्पायु में उन्हें पत्नी की मृत्यु का दुःख सहना पड़ा और दो छोटे बच्चों का भार संभालना पड़ा, उन्हें भी लुट्टन ने पहलवानी के दाँव-पेंच सिखाये।

v. जीवन के पंद्रह वर्ष राजा की छत्रछाया में सुखपूर्वक राजसी भोग करते हुए बिताये परंतु राजा के निधन के बाद उनके पुत्र ने उन पर होने वाले खर्च को फिजूलखर्ची मानकर उन्हें राजसी सुविधाओं से वंचित कर दिया।

vi. गाँव के बच्चों को पहलवानी सिखायी।

vii. अपने बच्चों की मृत्यु के असहनीय दुःख का सामना साहसपूर्वक किया।

viii. महामारी के समय अपने ढोल के द्वारा लोगों में उत्साह का संचार किया, उन्हें मृत्यु से लड़ने का साहस दिया।

c. यह पंक्ति एक बहुत गहरी बात को व्यक्त करने के लिए कही गई है। लेखिका पाकिस्तान तथा अमृतसर के कस्टम ऑफ़िसर की बात सुनकर हैरत में है। उसके अनुसार मानचित्र पर भारत तथा पाकिस्तान विभाजित हो चुके हैं। लेकिन लोगों के दिलों में इस विभाजन का नाम नहीं है। अतः वह हैरान हो जाती है और सोच में पड़ जाती है कि यह बता पाना कठिन है कि किसका वतन कहाँ है? जो दिलों के अंदर है या जो मानचित्र पर स्थित है। इनका मन तो अपनी जन्मभूमि है पर कार्यक्षेत्र व निवास कहीं और जैसे कहीं कोई सामंजस्य ही नहीं है।